AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (P): 2582:8800 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 02 | Issue 02| Oct-Dec 2021| ***www.agpegondwanajournal.co.in*** | Page No. 60-66

माध्यमिक छात्रों में सामाजिक समायोजन का आविर्भाव - एक चुनौती

Ghosh . S [1*] and Raj. R[2]

[1*]**Supriya Ghosh,** Research Scholar, Central Sanskrit University, Puri, Odisha
[2] **Dr. Rishi Raj,** Associate Professor, Central Sanskrit University, Puri, Odisha

शोधसार:

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। बाल्यकाल से ही शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण में अनुकूलित गुणों का समावेश करता है। हम जानते हैं कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्राप्ति का एक प्रमुख स्थल गुरुकुल व्यवस्था थी। उसी गुरुकुलव्यवस्था में रहकर बालक स्वयं के चरित्र का निर्माण करते थे जो भारतीयशिक्षा का प्रमुख उद्देश्य माना जाता था। १९४७ में भारत की स्वतन्त्रता के बाद १९५३ में माध्यमिक शिक्षा कमिशन के लिए शिक्षा-शास्त्रियों ने अपना सुझाव दिया कि जीवन को सफल बनाने के लिए मनुष्य में समायोजन एक महत्त्वपूर्ण गुण है जिसको बालक विद्यालय में सीखते हैं। शिक्षा-शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि छात्रों ने सामाजिकता, शांतिभाव, संतुष्टि, सकारात्मकता, गलतियों में सुधार, आदर्श व्यक्तित्व आदि सामाजिक सुसमायोजित गुणावली का विकास माध्यमिकशिक्षा प्राप्त करते समय होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण बालक भविष्य में आने वाली सभी बाधाओं का समाधान कर सकते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से शोधकर्त्ता ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में सामाजिक समायोजन के गुणों का आविर्भाव एक चुनौति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

प्रमुख शब्दावली: माध्यमिकशिक्षा, समायोजन, परिवार, अनुशासन, आत्म-जागरुकता।

१.भूमिका

शिक्षा मानव जीवन का आधारस्तम्भ है। शिक्षा के द्वारा ही मानवजीवन का विकास और उन्नयन होता है। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। क्योंकि जन्म के समय बालक अबोध होता है। वह अपने जन्मजात मूलप्रवृत्तियों से प्रेरित होकर अपना कार्य करता है। बाल्यवस्थापरान्त शिक्षा के द्वारा ही वह इन प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर समाजानुकूल कार्य करता है। शिक्षा के द्वारा ही वह इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Supriya Ghosh Research Scholar, Central Sanskrit University, Puri, Odisha Email: supriyaghosh033@gmail.com	

करके परिपक्वता प्राप्त करता है । बाल्यकाल से ही शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण में अनुकूलित गुणों का समावेश करता है । शिक्षा ही व्यक्ति को स्वयं की परिस्थिति तथा वातावरण के मध्य अनुकूलन करना सिखाती है । शिक्षा के द्वारा ही मानव ज्ञानवान, कला-कौशल युक्त और सभ्य बनाता है । शिक्षा-शास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बालकों में माध्यमिकस्तर पर सामाजिक समायोजन की प्रक्रिया को सीखना एक चुनौति के रूप में देखा गया है क्योंकि माध्यमिकस्तर का बालक किशोरावस्था में रहता है औरमनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को संघर्ष एवं तूफान व द्वन्द की अवस्था मानी है।

२.भारतीय शिक्षाव्यवस्था

भारतीय संस्कृति संस्कार प्रधान मानी गई है। संस्कारयुक्त जीवन प्राप्त करने के लिए बालक प्राचीन समय में गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करते थे। इसमें विद्यार्थी अपने घर से दूर गुरु के घर या आश्रम, मठ आदि में निवास कर शिक्षा प्राप्त करता थे ।

वैदिक काल में शिक्षा को मोक्ष तथा मुक्ति का साधन माना गया है। यही शिक्षापद्धति बालकों में मानवता के गुण विकसित करती है-

"विद्यां चाविद्यां च यस्तद् वेदोभय सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।।"[1]

उपनयन संस्कार पूर्वक छात्रों की शिक्षा का प्रारम्भिक स्वरूप भारतीयशिक्षा में माना गया है-

"पदक्रमविशेषज्ञो वर्णक्रमविचक्षणः ।
स्वरमात्राविभागज्ञो गच्छेदाचार्यसंसदम् ।।"[2]

वैदिककालीन शिक्षा में गुरु का महत्त्व सभी ने स्वीकृत किया है। गुरुकुल में सभी छात्र एकसाथ मिलकर गुरु के पास रहते थे । गुरुकुल के निर्देशानुरूप अपनी दैनिकदिनचर्य्या द्वारा स्वयं के जीवन को उन्नत बनाते थे। गुरुकुल की शिक्षा प्रक्रिया बालकों में सदाचरण, अनुशासन, मित्रता, सहयोग, समानता आदि गुणों का संमिश्रण करती है जिससे बालकों में उच्च मूल्ययुक्त चारित्रिक गुणों का समावेश होता है। अतः भारतीय संस्कृति के आधार पर शिक्षा का उद्देश्य बालकों में चरित्र का निर्माण, व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का ज्ञान, सामाजिक सुख तथा कौशल की वृद्धि, संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार, निष्ठा तथा धार्मिकता का संचार करना आदि ।

३.माध्यमिक शिक्षा

भारत में वैदिककाल में पारम्परिक शिक्षा के बाद बौद्धशिक्षा पद्धति का प्रवर्तन हुआ । ६२३ ख्रीष्टाब्दी में भगवान बुद्ध जन्म लिए थे । संस्कारयुक्त होकर ज्ञान की वृद्धि करना बौद्धकालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य माना गया है। ११९२ ख्रीष्टाब्दी में भारत में मुस्लिम शासकों का प्रवेश हुआ । १७६५ ख्रीष्टाब्दी में ईस्ट इंडियाकम्पनी ने व्यावसायिक कार्यों के लिए भारत में प्रवेश किया। इन्होंने अपने व्यावसायिक प्रचार के साथ-साथ भारत में अपना शासन भी स्थापित किया । भारत में शासनतन्त्र को सुदृढ करने के उद्देश्य से भारतीयशिक्षाक्षेत्र में पाश्चात्यशिक्षा

[1] यजुर्वेद ४०.११

[2] तैत्तिरीयप्रातिशाख्य २४

संस्कृति को लागू करने का प्रयास भी आंग्लशासकों ने किया। १८३५ ख्रीष्टाब्दी में लार्ड मैकाले द्वारा प्रस्तावित मैकाले-विवरण (Mecaulay's Minutes) के प्रयोग से भारतीय शिक्षापद्धति का पाश्चात्यीकरण करने का प्रयास किया गया जो पूर्णरूप से सफल भी रहा। १९४७ ई. में भारत की स्वतन्त्रता के बाद भारतीय शिक्षा की गुणवत्त्वा में वाञ्छित परिवर्तन लाने के लिए अनेक प्रकार के कमिटियाँ निर्मित हुआ था । विद्यालयीय शिक्षा में संशोधन और अपेक्षित दिशा में सुधार के लिए १९५३ में माध्यमिक शिक्षा कमिशन ने अपना सुझाव दिया । यद्यपि इसके बाद अनेकों कमिशनों के द्वारा सम्पूर्ण देश में माध्यमिक शिक्षा का प्रसार और गुणवत्ता संवर्धन के लिए बारम्बार गवेषणा, सर्वेक्षण आदि की सञ्चालना हुई थी । भारत में प्राथमिक विद्यालय के चतुर्वर्षीय अध्ययन के बाद माध्यमिक स्तर के अध्ययन का प्रारम्भ होता है । भारत सर्वकार की स्वायत्त संस्था एनसीटीई द्वारा माध्यमिकस्तर के छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु विद्यालय-प्रशासन, शिक्षक-छात्र, शिक्षक-प्रशिक्षण आदि सम्बन्धित नीति-निर्देश प्रसारित किये जाते हैं। भारत सर्वकार के अधीनस्थ एनसीईआरटी नामक संस्था के द्वारा सम्पूर्ण भारत में माध्यमिकस्तर के पाठ्यक्रम का निर्माण और नीति-निर्देशों का निर्धारण किया जाता है जो बालकों में सामाजिक समायोजन का आविर्भाव करने में महत्त्वपूर्ण योगदान निभाता है।

४.माध्यमिक शिक्षा के छात्रों में समायोजन की प्रकृति

शिक्षा ग्रहण करने का प्रमुख स्रोत विद्यालय है, जहाँ विद्यार्थी समाज के विविध स्तर से आनेवाले मित्रों से मिलता है । विशेषकर माध्यमिक स्तर के छात्रों की आयु १२-१६ वर्ष की प्रायः होती है । मनोविज्ञान की दृष्टि से यह किशोरावस्था का समय माना जाता है। अतः मनोवैज्ञानिकों का मानना है की जीवन को सफल वनाने के लिए सभी के साथ समायोजित होने का गुण इसी काल में व्यक्ति को प्राप्त करने चाहिए। इसी सुसमायोजित गुणों के कारण व्यक्ति भविष्य में सफल होते हैं । इसी समायोजन क्षमता के कारण वह स्वतंत्र विचार एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण होते हैं । व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती है जिनको वह अपने वातावरण से समायोजित करने का प्रयास करता है । जो व्यक्ति वातावरण एवं परिस्थितियों से स्वयं को समायोजित कर लेता है, वह प्रसन्न रहता है और जो समायोजन स्थापित नहीं कर पाता है वह असन्तोष, कुण्ठा, द्वन्द्व एवं तनाव का शिकार हो जाता है एवं अपने लक्ष्य से भटक जाता है, जिससे छात्रों के शारीरिक-मानसिक-शैक्षिक विकास के हर स्तर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।

५.माध्यमिक शिक्षा के छात्रों में सामाजिक समायोजन की उपयोगिता:

१.सामाजिकता का विकास - हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जो विभिन्न प्रकार के लोगों से घिरा हुआ है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी मानसिकता, व्यक्तित्व और दृष्टिकोण है जो हमारे दृष्टिकोण से भिन्न होगा । चूंकि हम छोटी-छोटी बातों के लिए हर बार विरोध, संघर्ष और तनाव को खुद से अलग-थलग करने का जोखिम नहीं उठा सकते हैं, इसलिए सामाजिक समायोजन की कला का अभ्यास करना समझ में आता है । इससे बालकों में सामाजिक गुणों का विकास होता है ।

२.शान्तिभाव स्थापन - जब व्यक्ति समाज में थोड़े से समायोजन के साथ शांति से रह सकते हैं तो समाज भी उसको स्वीकृत कर लेता है। कभी-कभी लोगों के साथ समझौता करना या मुद्दों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाना बिल्कुल ठीक होता है।

३.संतुष्टि - जब बालक अपने परिवेश के साथ शांति बनाए रखना सीखते हैं तो यह संतुष्टि और शांति का अनुभव देता है। हालांकि यह स्पष्ट है कि बालक का अहं रास्ते में आएगा, लेकिन अंत में यह सामाजिक समायोजन के द्वारा वह आंतरिक रूप से संतुष्ट रहेगा। शुरुआती दिनों में आत्मसन्तुष्टि कठिन होती है लेकिन धीरे-धीरे बालक का अहंकार कमजोर हो जाएगा और अंततः लंबे समय में गायब हो जाएगा।

४.सकारात्मक दृष्टिकोण - जो अपने समाज में समायोजित होते हैं वह जानते हैं कि बदलती परिस्थितियों के साथ कैसे तालमेल बिठाना है। क्या आप उनमें से एक नहीं बनना चाहते हैं ? जब बालक समाज में समायोजन की कला सीखते हैं तो आप जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण बनाते हैं और मूर्खतापूर्ण झगड़े और अनावश्यक तर्कों से दूर जाना सीखते हैं। परेशान करने वाले लोग हमेशा परेशान रहेंगे। एक मूर्ख से क्यों लड़ो और अपने मन की शांति को बर्बाद करो ! ऐसे लोगों को इग्नोर करें और दूर हो जाएं।

५.गलतियों में सुधार – किशोरावस्था के बालकों में परस्पर अन्तरद्वन्द्व होता है जिससे हम उन सभी कार्यों का सामना करते हैं जो हमें ठेस पहुँचाते हैं। हममें से बहुत कम लोग अपने स्वयं के दोषों को स्वीकार कर सकते हैं। गलती करना मानवीय स्वभाव होता है और चूंकि हम हमेशा सही नहीं हो सकते, इसलिए कभी-कभी अपनी सीमाओं को स्वीकारना और अपने आसपास के लोगों के विचारों के साथ तालमेल बिठाना बेहतर होता है। जिससे बालक स्वयं की गलतियों को सुधार कर सकता है।

६.आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण - आदर्श व्यक्ति वह होता है जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक रूप से सभी गुणों का उत्तम समायोजन हो। वैसे ही सामाजिक रूप से समायोजित बालक में मानवीय नैतिक मूल्यों का समावेश होता है जिससे न केवल उस समाज का अपितु सम्पूर्ण जाति और राष्ट्र का भी सर्वोत्तम विकास होता है।

६.सामाजिक समायोजन के आविर्भाव में बाधाएं

A. एकल परिवार (Single Family)

आज के इस आधुनिकयुग में सामाजिकदृष्टि से संयुक्त परिवारों का क्षेत्र संकुचित होता जा रहा है। और एकल परिवारों का क्षेत्रव्यापक स्तर पर वृद्धि कर रहा है। मूल परिवार से भिन्न होकर एकल परिवार का निर्माण होने लगा है। एकल परिवार में शैशवावस्था से ही बच्चा माता और पिता के अलावा किसी से जादातर नहीं मिलते हैं। घर के बाहर जो एक समाज है उससे प्रायः वह जुडा नहीं पाते हैं। इससे उस बच्चे के मन में सामाजिक समायोजन गुणों का अभाव देखने को मिलता है।

B. हाशिए पर स्थित समूह (Marginalized Group)

आधुनिक समाज में यद्यपि सबको समान रूप से मान्यता प्रदान की गयी है फिर भी कुछ ऐसे समुदाय मिलते है यहाँ शिक्षा-आर्थिक स्थिति-धर्म-वर्ण आदि से पिछड़े हुए वर्ग को हम समाज में अंतर्निहित नहीं कर पाते हैं

। उसे हम हाशिए पर स्थित समूह कहते है । उन वर्ग के छात्रों समाज के सभी सदस्यों के साथ नहीं मिल पाते हैं । जिससे उन छात्रों में सामाजिकरूप से समायोजन के गुण विकसित नहीं हो पाते हैं ।

C. तनाव (Stress)

तनाव का अर्थ व्यक्ति की उस शारीरिक तथा मानसिक दशा से है जो उसमें उत्तेजना के असंतुलन को उत्पन्न कर देती है। तनाव होने पर व्यक्ति का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति का समायोजन बुरी तरह प्रभावित होता है। तनाव के अनेक कारण हो सकते है जैसे - आवश्यकता, इच्छा, आकांक्षा, लक्ष्य, अपमान, असफलता एवं शारीरिक दोष आदि ।

D. व्यस्त जीवन (Busy Life)

आज के दिन में व्यक्ति का जीवन विविध कारणों से स्वतः व्यस्त हो गया है । दैनंदिन आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए व्यक्ति व्यस्त हो गए हैं । उससे उन व्यक्तियों के बच्चे भी अपने पिता-माता एवं परिजनों से दूर हो जाते हैं । सामाजिक अन्तःक्रिया का अभाव इससे ही अधिक देखने को मिलता है। और वैसे ही उन परिवार के बच्चो में सामाजिक रूप से समायोजित नहीं हो पाता है।

E. आधुनिकता (Modernisation)

आधुनिक समय में जीवन के हर एक खण्ड में आधुनिकता देखने को मिलती है। आधुनिक संसाधनों का उपयोग हम निरन्तर कर रहे हैं। लेकिन उन संसाधनों के उपयोग से व्यक्ति और व्यक्तियों के बीच आन्तरिक दूरी बन गई है। जो मानव को सामाजिक होने में बाधा उत्पन्न करते हैं। हमारी भाषा, व्यवहार, भोजन, रुचि आदि में जितनी आधुनिकता आयी है उतना ही हम असामाजिक बनते जा रहे हैं। इसी आधुनिकता का अनुसरण करते हुए आज के परिवेश में बालक भी समाज में समायोजित नहीं हो पा रहा है ।

F. जिम्मेदारियों की कमी (Lack of Responsibilities)

माध्यमिकस्तर के छात्रों नें अपने वयःसन्धि के कारण सामाजिक विविध कार्यों में अपना योगदान देना चाहता है। बहुत सारे कठिन परिस्थितियाँ में भी सब के साथ तालमेल रख कर समस्या का समाधान ढूँढते हैं। लेकिन उनको बालक समझकर कोई जिम्मेदारी नहीं सौंपी जाती है। इससे वह समाज में समायोजित नहीं हो पाते हैं।

७.सुझाव

1. बच्चों को आत्मविश्वासी होने के लिए, माता-पिता को सावधान रहना चाहिए कि वे प्यार और निषेध की सीमा पार ना करें ।
2. बच्चों को कम उम्र से ही वयस्कों की तरह नहीं, बल्कि खुद की तरह सोचने का मौका दिया जाना चाहिए ।
3. पारिवारिक अनुशासन यांत्रिक नहीं होना चाहिए । इसके बजाय, बचपन से ही आत्म-अनुशासन पैदा किया जाना चाहिए ।

4. विद्यालय को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि बच्चा मतभेदों को भूल सके और अपने सभी सहपाठियों के साथ अच्छे संबंध बना सके।
5. बच्चे की आत्म-जागरूकता और आत्म-सम्मान को महत्व देना चाहिए।
6. सभी मतभेदों को भूलकर ऐसी व्यवस्था करें कि सभी छात्रों नें विद्यालय की विविध सह-पाठयक्रमिक कार्यावली में भाग ले सकें।
7. उन्हें समाज की विभिन्न जिम्मेदारियों को निभाने का अवसर देना होगा।
8. उन्हें सामाजिक अनुशासन पालन करने के लिए परिवार से ही प्रोत्साहित करना है।
9. संयुक्त परिवार से ही बच्चो का पालन करना चाहिए। अगर एकल परिवार हो तो संयुक्त परिवार के साथ जुड़े रहना चाहिए और पिता-माता को वच्चो के साथ अधिक समय व्यतीत करना चाहिए।
10. समाज के सभी वर्ग से आनेवाले बच्चो से मिलने के लिए प्रेरित करना चाहिए। कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए।
11. आकांक्षा पूरी ना होने की वजाय बच्चो नें चिंता, तनाव आदि से ग्रस्त ना हो इसलिए अभिभावकों को सर्वदा आंतरिक रूप से प्रेरित करना चाहिए।
12. भौतिक जगत से ज्यादा मानवीय रिश्तें की सम्पर्क में रह सकते है इसके लिए अभिभावकों को सतर्क रहना चाहिए।

८.निष्कर्ष

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में पैदा होते है, बड़ा होते है, कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए जीवनयापन करते हैं। इसलिए समाज के प्रति सबकी जिम्मेदारी बनती है। हममें से प्रत्येक उन जिम्मेदारियों को पूरा करता है। आज हमारे समाज का हर पहलू आधुनिकता के स्पर्श से आलोकित है। लेकिन कुछ मामलों में, मानव कल्याण बिगड़ गया है। जो वास्तव में सामाजिक कुसमायोजन का एक संशोधित रूप है। लोग आज बहुत असहिष्णु हो गए है। छोटी-छोटी बातों पर सोचना, चिन्तन करना, विश्लेषण करना आज लगभग विलुप्त हो चुका है। आज हम सभी व्यक्तिगत बेहतरी के लिए प्रयास करते हैं। किसी को परवाह नहीं है कि हमारा समाज सुधरे या बिगड़े। इस सामाजिक समायोजन के अभाव से समाज में कितनी ईर्ष्या, भय, क्रोध, घृणा आदि दिखाई देने वाली है। उस समाज में पाले जा रहे बच्चे हमारा भविष्य हैं तो इस कुसमायोजन का असर बच्चों में भी देखा जा सकता है। आज के बच्चे परिवार, विद्यालय, समाज आदि में आक्रामक व्यवहार प्रदर्शन करते है और धैर्य की कमी उनके अंदर देखने को मिलते है। माध्यमिक स्तर के बच्चे सर्वाङ्गीण विकास के मध्य चरण में हैं। अतः सामाजिक समायोजन का अभाव उनकी संपूर्ण विकास प्रक्रिया को प्रभावित करता है। जो न केवल हमारे समाज के लिए बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए खतरनाक हो जाता है। इसलिए पारंपरिक शिक्षा प्रक्रिया के साथ आधुनिकता का संयोजन करके शिक्षा प्रक्रिया के विकास की ओर ले जाना चाहिए जो आधुनिक नैतिक मूल्यों के साथ एक आदर्श समाज के निर्माण में मदद करता है।

सन्दर्भसूची:

1. पाण्डया, शकुन्तला. 1986."जीवन मूल्य", राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राजस्थान.
2. कपिल, एच. के. 1996. सामान्य मनोविज्ञान, हर प्रसाद भार्गव ,41230, कचहरी घाट, आगरा.
3. सारस्वत, मालती.1984.शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा,आलोक प्रकाशन, इलाहावाद विवेकानन्द मार्ग-3.
4. Gangarade, K. G. 1975. Crisis of values : A Study in Generation Gape, New Delhi, New Delhi, Chetna, Publications.
5. Gupta, K.2000. Structure & organization in indian family : The Emerging patterns, New Delhi Gyan Publishing House.
6. बृजेश, चन्द्र. 2005.विद्यालय की छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, (जुलाई-दिसम्बर),वर्ष-24,अंक-2.

■ ■ ■